पाठ 11

आत्मनिर्भरता

(प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने युवकों को स्वयं पर निर्भर रहने की प्रेरणा दी है।)

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है। इस बात को सब लोग मानते हंै कि आत्मसंस्कार के लिए

थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतन्त्रता परम आवश्यक है-चाहे उस स्वतन्त्रता में अभिमान और नम्रता

दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हंै। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे। ये बातें आत्म-मर्यादा के लिए आवश्यक हंै। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है - हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे कर्म, हमारे भोग, हमारे घर की और बाहर की दशा, हमारे बहुत से अवगुण और थोड़े गुण सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मन्द हो जाती है, जिसके

कारण आगे बढ़ने के समय भी वह पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चटपट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर लगाये। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच, अपनी राह आप निकालती है।

अब तुम्हें क्या करना चाहिए, इसका ठीक-ठीक उत्तर तुम्हीं को देना होगा, दूसरा कोई नहीं दे सकता। कैसा भी विश्वासपात्र मित्र हो, तुम्हारे इस काम को वह अपने ऊपर नहीं ले सकता। हम अनुभवी लोगों की बातों को आदर के साथ सुनें, बुद्धिमानों की सलाह को कृतज्ञतापूर्वक मानें, पर इस बात को निश्चित समझकर कि हमारे कामों से ही हमारी रक्षा व हमारा पतन होगा, हमें अपने विचार और निर्णय की स्वतन्त्रता को दृढ़तापूर्वक बनाये रखना चाहिए। जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है, उसका सिर कभी ऊपर नहीं होगा। नीची दृष्टि रखने से यद्यपि रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को न देखेंगे कि यह रास्ता कहाँ ले जाता है। चित्त की स्वतन्त्रता का मतलब चेष्टा की कठोरता या प्रकृति की उग्रता नहीं है। अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो। अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो। जितना ही जो मनुष्य अपना लक्ष्य ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है।

संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़चित्त मनुष्य हो गये हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी, अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया। राजा हरिश्चन्द्र के ऊपर इतनी-इतनी विपत्तियाँ आयीं, पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा। उनकी प्रतिज्ञा यही रही-

‘चन्द टरै, सूरज टरै, टरै जगत ब्यौहार।

पै दृढ़ श्रीहरिचन्द को, टरै न सत्य विचार।।’

महाराणा प्रताप जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते थे, अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से तड़पते देखते थे, परन्तु उन्होंने उन लोगों की बात न मानी जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक जीते रहने की सम्मति दी, क्योंकि वे जानते थे कि अपनी मर्यादा की चिन्ता जितनी अपने

को हो सकती है, उतनी दूसरे को नहीं। एक बार एक रोमन राजनीतिक बलवाइयों के हाथ में पड़ गया। बलवाइयों ने उससे व्यंग्यपूर्वक पूछा, 'अब तेरा किला कहाँ है?' उसने हृदय पर हाथ रखकर उत्तर दिया, 'यहाँ।' ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिए यही बड़ा भारी गढ़ है। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं, जो सदा एक-न-एक नया अगुआ ढूँढ़ा करते हैं और उनके अनुयायी बना करते हैं, वे आत्मसंस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते। उन्हें स्वयं विचार करना, अपनी सम्मति आप स्थिर करना, दूसरों की उचित बातों का मूल्य समझते हुए भी उनका अन्धभक्त न होना सीखना चाहिए। एक इतिहासकार कहता है- 'प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसके हाथ में है। प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन-निर्वाह श्रेष्ठ रीति से कर सकता है। यही मैंने किया है और यदि अवसर मिले तो यही करूँ।' इसे चाहे स्वतन्त्रता कहो, चाहे आत्म-निर्भरता कहो, चाहे स्वावलम्बन कहो, जो कुछ कहो, यह वही भाव है जिससे मनुष्य और दास में भेद जान पड़ता है, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से राम-लक्ष्मण ने घर से निकल बड़े-बड़े पराक्रमी वीरों पर विजय प्राप्त की, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से हनुमान ने अकेले सीता की खोज की, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से कोलम्बस ने अमरीका समान बड़ा महाद्वीप ढूँढ़ निकाला।

इसी चित्तवृत्ति की दृढ़ता के सहारे दरिद्र लोग दरिद्रता और अपढ़ लोग अज्ञता से निकलकर उन्नत हुए हैं तथा उद्योगी और अध्यवसायी लोगों ने अपनी समृद्धि का मार्ग निकाला है। इसी चित्तवृत्ति के आलम्बन से पुरुष-सिंहों को यह कहने की क्षमता हुई है, 'मैं राह ढूँढ़ूँगा या राह निकालूँगा।' यही चित्तवृत्ति थी जिसकी उत्तेजना से शिवाजी ने थोड़े वीर मराठे सिपाहियों को लेकर औरंगजेब की बड़ी भारी सेना पर छापा मारा और उसे तितर-बितर कर दिया। यही चित्तवृत्ति थी जिसके सहारे एकलव्य बिना किसी गुरु या संगी-साथी के जंगल के बीच निशाने पर तीर पर तीर चलाता रहा और अन्त में एक बड़ा धनुर्धर हुआ। यही चित्तवृत्ति है जो मनुष्य को सामान्य जनों से उच्च बनाती है, उसके जीवन को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण करती है तथा उसे उत्तम संस्कारों को ग्रहण करने योग्य बनाती है। जिस मनुष्य की बुद्धि और चतुराई उसके हृदय के आश्रय पर स्थित रहती है, वह जीवन और कर्म-क्षेत्र में स्वयं भी श्रेष्ठ और उत्तम रहता है और दूसरों को भी श्रेष्ठ और उत्तम बनाता है। प्रसिद्ध उपन्यासकार स्टॉक एक बार ऋण के बोझ से बिलकुल दब गये।

मित्रों ने उनकी सहायता करनी चाही, पर उन्हांेने यह बात स्वीकार नहीं की और स्वयं अपनी प्रतिभा का सहारा लेकर अनेक उपन्यास थोड़े समय के बीच लिखकर लाखांे रुपये का ऋण अपने सिर पर से उतार दिया।

-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र ुक्ल का जन्म बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में 04 अक्टूबर सन्1884 ई0 को हुआ था। आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष थे। हिन्दी के प्रख्यात समीक्षक और हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखक के रूप में ुक्ल जी की प्रसिद्धि है। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'चिन्तामणि', 'गोस्वामी तुलसीदास' आदि आप के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनका निधन 02 फरवरी सन् 1941 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

आत्म संस्कार = अपना सुधार। आत्म मर्यादा = अपनी सीमा में रहना, स्वयं को सदाचार में रखना। उच्चाशय = ऊँचा लक्ष्य, ऊँचा अभिप्राय। बलवाईं = दंगा करने वाले। जिज्ञासा = जानने की इच्छा। अन्धभक्ति = बिना विचारे किसी पर श्रद्धा करना। निद्र्वन्द्वता = सब तरह से स्वच्छन्द। अध्यवसायी = लगातार यत्न करने वाला, उद्यमशील, उत्साही। चित्तवृत्ति = मन का भाव।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. सच्ची लगन से ही एकलव्य बिना किसी गुरु के बहुत बड़ा धनुर्धर बन गया। सच्ची लगन से कठिन कार्य आसानी से पूर्ण हो जाते हैं। आपकी पाठ्यपुस्तक में कुछ अंश अवश्य आये होंगे, जो एक बार में आपकी समझ में नहीं आते होंगे। बार-बार पढ़कर आप उन्हें स्पष्टतः समझ सकते हैं। पाठ में आये ऐसे अंशों को खोजकर लिखिए।

2. अपने शिक्षक से राजा हरिश्चन्द्र, कोलम्बस, महाराणा प्रताप, शिवाजी, एकलव्य, हनुमान के बारे में जानकारी कीजिए।

विचार और कल्पना

1. आपके विचार में आदर्श व्यक्ति के चरित्र में कौन-कौन से गुण होना आवश्यक हैं?

2. नम्रता और दब्बूपन में क्या अन्तर होता है ?

3. आत्मनिर्भरता व्यक्ति का बहुत बड़ा गुण होता है। इससे कुछ करने की शक्ति का विकास होता है। आप अपने किन-किन कार्यों के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं हैं तथा किन-किन कार्यों के लिए आप दूसरों पर निर्भर रहते हंै। अलग- अलग सूची बनाइए।

निबन्ध से

1. इस पाठ का उद्देश्य क्या है? सही कथनों पर सही का चिह्न (ü) लगाइए।

(क) युवाओं में नयी स्फूर्ति भरना।

(ख) युवाओं को कर्म में लगाना।

(ग) जितना ही मनुष्य अपना लक्ष्य नीचे रखता है उतना ही तीर उसका ऊपर जाता है।

(घ) युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देना।

(ड़.) युवाओं को महापुरुषों के जीवन के प्रेरक-प्रसंगों की जानकारी देना।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है।
(ख) युवाओं को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं।
(ग) मनुष्य का बेड़ा उसके हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर लगाये।
(घ) अध्यवसायी लोगों ने अपनी समृद्धि का मार्ग निकाला है।

3. उपन्यासकार स्टॉक ने अपना ऋण किस तरह उतारा ?

4. समूह 'ख' का कौन-सा शब्द या वाक्यांश समूह 'क' में दिये गये किन से सम्बन्धित है ? छाँटकर समूह 'क' के सम्मुख लिखिए -

समूह 'क' **समूह 'ख'**

हरिश्चन्द्र - छापामार युद्ध

महाराणा प्रताप - अमेरिका की खोज

हनुमान - धनुर्धर

कोलम्बस - सत्यवादी

शिवाजी - अधीनता नहीं स्वीकार की

एकलव्य - सीता की खोज

भाषा की बात

1. 'आत्मसंस्कार' शब्द में 'संस्कार' के पूर्व 'आत्म' शब्द जुड़ा हुआ है। दिये गये शब्दों के पूर्व 'आत्म' लगाकर नये शब्दों की रचना कीजिए -

परिचय, चिन्तन, निर्भर, बोध, कथन।

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए -

मुँह ताकना, अपने पैरों के बल खड़ा होना, दृष्टि नीची होना, सिर ऊपर होना, अपने हाथ में अपना भाग्य होना, कठपुतली बनना, एदय पर हाथ रखना।

3. 'जीवननिर्वाह' समास पद का विग्रह है-'जीवन का निर्वाह'। सामासिक शब्द बनाने पर 'का' कारकचिह्न का लोप हो गया है। 'का' सम्बन्ध कारक का चिह्न है। अतः यह सम्बन्ध कारक तत्पुरुष समास है। नीचे लिखे समास पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए -

अहंकारवृत्ति, आत्मसंस्कार, आत्ममर्यादा, चित्तवृत्ति, राम-लक्ष्मण ।

4. निम्नलिखित में से प्रधान उपवाक्य तथा आश्रित उपवाक्य को अलग-अलग लिखिए -

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है।

सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में ..... अपनी राह आप निकालती है।

5. ‘स्वतंत्रता’ का विपरीतार्थक है -

(क) आजादी

(ख) परतन्त्रता

(ग) स्वावलम्बन

(घ) स्वराज्य

6. जब दो पदांे में समास होता है तो प्रायः उनके बीच सामासिक चिह्न (-) लगा दिया जाता है किन्तु आवश्यकतानुसार दो पदों में सन्धि भी की जाती है, जैसे- विद्यालय, विद्यार्थी। ध्यान रहे कि द्वन्द्व समास जैसे-माता-पिता, राम-लक्ष्मण आदि में सामासिक चिह्न अनिवार्य है अन्यथा सीताराम (सीता के राम) तथा सीता-राम (सीता और राम) समास में अन्तर नहीं हो सकेगा। अन्य सामासिक पदों को सयंुक्त रूप में लिखा जा सकता है।

7. प्रस्तुत चित्र को ध्यान से देखिए और अपने विचार अपनी पुस्तिका में लिखए। साथ ही उसका शीर्षक भी दीजिए-

इसे भी जानें

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं (असमिया, ओड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलगु, नेपाली, पंजाबी, बंग्ला, बोड़ो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी, हिन्दी) को बोलने वालों की संख्या लगभग 90 प्रतिशत है।